भाकृअनुप - राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक 753 006

कृषि सलाहकार सेवा

सितंबर 2023 के प्रथम पखवाड़े की रणनीतियाँ

- *एक ही खेत से अलग किए गए अधिक दिनों वाली पौधों या क्लोन पौधों को 33 पौधे प्रति पूंजा प्रति वर्गमीटर की दर पर खाली स्थान का भरण करें।*
- *देर से रोपाई के लिए अधिक दिनों वाली पौधों का उपयोग करने हेतु किसानों को सलाह दी जाती है कि वे शीघ्र पकने वाली या मध्यम शीघ्र अवधि वाली चावल किस्मों के 25-30 दिनों वाली पौधों तथा लंबी अवधि किस्मों के 45-50 दिन पुराने पौधों का उपयोग करें। कीचड़दार मिट्टी में उथली गहराई पर 15 x15 सेमी की दूरी पर 4-5 रोपाई प्रति पूंजा रोपें।*
- *खरपतवार के नियंत्रण के लिए रोपाई करने के 5-10 दिनों बाद शाकनाशी बेनसल्फ्यूरॉन मिथाइल 0.6 + प्रीटिलाक्लोर 6% जीआर 4 किग्रा / एकड़ की दर से 4 किग्रा रेत मिलाकर प्रयोग करें या खरपतवार निकलने के 8-10 दिनों बाद (खरपतवार की 2-3 पत्ती अवस्था) पर बिस्पायरीबैक सोडियम 10 एससी 120 मि.ली./एकड़ की दर से 16 लीटर क्षमता वाले 8 टैंकों से छिड़काव करें या पेनॉक्सुलम + साइहालोफॉप ब्यूटाइल (विवाया) 900 मिली/एकड़ दर पर या रोपाई के 15-20 दिन बाद फेनोक्साप्रोप-पी-एथिल+ एथोक्सिसल्फ्यूरॉन (राइस स्टार + सनराइज) 240+50 ग्राम/एकड़ दर से छिड़काव करें।*
- *शीघ्र रोपाई की गई धान में, यदि थ्रिप्स की समस्या देखी जाती है, तो किसान नीम के बीज की गिरी आधारित कीटनाशक जैसे अजाडिराक्टीन 0.15% 1 लीटर/एकड़ की दर से या लैम्ब्डा-साइहलोथ्रिन 5% ईसी 100 मिली/एकड़ की दर से या थियामेथोक्सम 25% डब्ल्यूजी 40 ग्राम /एकड़ 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव कर सकते हैं ।*
- *तना छेदक आक्रांत वाले क्षेत्रों में, अंडा परजीवी ट्राइकोग्रामा जैपोनिकम 20000 अंडे/एकड़ (1-2 कार्ड/एकड़) साप्ताहिक अंतराल पर तब तक छोड़ें। इस प्रकार 4-5 बारि दोहराएं।*
- *तना छेदक, पत्ती मोड़क और अन्य वयस्कों कीटों को आकर्षित करने और उन्हें मारने/पकड़ने के लिए 1 जाल/एकड़ की दर से प्रकाश जाल लगाएं।*
- *धान खेत में तना छेदक और पत्ता मोड़क के संक्रमण की निगरानी के लिए 3 फेरोमोन ट्रैप/एकड़ रखें। जब भी नर कीट/जाल की संख्या 4 या 5 तक पहुँच जाए, तो अजाडिरक्टिन 0.15% ईसी 800 मिली/एकड़ दर से या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 4% जीआर 4 किग्रा/एकड़ 1:1 के अनुपात में रेत के साथ मिलाकर या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 60 मिली/एकड़ 200 लीटर पानी दर से या टेट्रानिलिप्रोल 200 एससी 100-120 मिली/एकड़ 200 लीटर पानी की दर से या फ्लूबेनडियामाइड 20 डब्ल्यूजी 50 ग्राम/एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर या कार्टैप हाइड्रोक्लोराइड 4जी 10 किग्रा/एकड़ दर से छिड़काव करें।*
- *जब भी दो मुड़ी हुई पत्तियां/पूंजा दिखाई दें तो पत्ता मोड़क को नियंत्रित करने के लिए क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 60 मिली/एकड़ दर से या फ्लूबेंडियामाइड 20 डब्ल्यूजी 50 ग्राम/एकड़ या करटाप 50 डब्ल्यूपी 400 ग्राम/एकड़ दर से टेट्रानिलिप्रोल 200 एससी 100-120 मिली/एकड़ 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।*

- *जस्ता की कमी वाले क्षेत्रों में, यदि अंतिम भूमि की तैयारी के दौरान जिंक सल्फेट प्रयोग नहीं किया गया है, तो धान की रोपाई के 30 और 45 दिनों के बाद जस्ता-EDTA 0.5 ग्राम / 1 लीटर दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करें या, खेत में जस्ता की कमी के लक्षण दिखाई देने पर 15 दिनों के अंतराल पर 0.5% जिंक सल्फेट घोल (एक एकड़ में 400 लीटर पानी में 2 किग्रा जिंक सल्फेट+10 किग्रा चूना) तीन बार छिड़काव करें।*
- *यदि 1-2 दौजी में आच्छद अंगमारी प्रकोप देखा जाता है टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ़्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 0.4 ग्राम/एकड़ दर पर छिड़काव करें या प्रोपिकोनाज़ोल 75% 1 मिली प्रति लीटर पानी दर से या हेक्साकोनाज़ोल 50% 2 मिली प्रति लीटर पानी में या वैलिडैमाइसिन 3L 2 मिली/लीटर पर छिड़काव करें। 7-10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव दोहराएं। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *जीवाणुज अंगमारी/जीवाणुज पत्ता अंगमारी होने की स्थिति में, प्लांटोमाइसिन 1 ग्राम/लीटर की दर से कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.5-0.75 ग्राम/लीटर सहित 200 लीटर पानी प्रति एकड़ का प्रयोग करें।*
- *यदि पत्ता प्रध्वंस देखा जाता है, रोग को नियंत्रित करने के लिए टेबुकोनाजोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% (नैटिवो 75 डब्ल्यूजी) 80 ग्राम प्रति एकड़ दर पर या एडिफोनफेस 50 ईसी 2 मिली/लीटर की दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करें या या ट्राईसाइक्लाज़ोल 75 डब्ल्यूपी 0.6 ग्राम/लीटर की दर से छिड़काव करें या वैकल्पिक रूप से, बेल के पत्तों (25 ग्राम ताजी पत्तियां) का निचोड़ का छिड़काव या तुलसी (25 ग्राम ताजी पत्तियां) या नीम (200 ग्राम ताजी पत्तियां) प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने पर रोग कम करने में मदद कर सकता है।*
- *सीधी बुआई वाले चावल में भूरा धब्बा होने की स्थिति में, प्रोपिकोनाज़ोल 25ईसी 200 मिली/एकड़ दर से या मैनकोज़ेब 75 डब्लयूपी 400 ग्राम/एकड़ दर से या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लयूपी 400 ग्राम/एकड़ दर से या कार्बेडाजिम 64% + मांकोजेब 8% 75 डब्लयूपी 300 ग्राम/एकड़ दर पर का छिड़काव करें। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *यदि फसल 45 दिन से अधिक पुरानी हो तो सीधी बुवाई वाले धान में बेउषण न करें।*
- *किसानों को सलाह दी जाती है कि वे धान की खेती के सभी पहलुओं के लिए एनआरआरआई द्वारा विकसित राइसएक्सपर्ट मोबाइल ऐप (गूगल प्ले स्टोर में उपलब्ध) को डाउनलोड करें और उसका उपयोग करें।*

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बाढ़ के बाद धान की फसल का प्रबंधन:

- *मध्य-मौसम सूखे में, रिसाव के के कारण होने वाले नुकसान को रोकने और खेतों को खरपतवार मुक्त रखने के लिए मेड़ की ऊंचाई बढ़ाने और मेड़ों में छेद बंद करने की सलाह दी जाती है।*
- *वैकल्पिक रूप से खेत को गीला करने और सुखाने जैसी कुशल सिंचाई तकनीकों का प्रयोग करें जिससे पानी की खपत कम हो।*
- *वाष्पीकरण हानि को कम करने के लिए मिट्टी में जैविक पदार्थ मिलाएं।*
- *ऊपरी भूमियों में, यदि चावल की फसल अभी तक बोई नहीं गई है या सूखे के कारण क्षतिग्रस्त हो गई है, तो किसानों को लोबिया (उत्कलमणिका), उड़द (टी-9, सरला, पीयू 19, 30), चना (के851), कुल्थी/(उर्मि) और सेसमम (कनक, कालिका, उमा, उषा) जैसी कम अवधि वाली एवं कम पानी की आवश्यकता वाली फसलें करनी चाहिए।*

- *यदि फसल पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई है, तो मौसम के अंत में पर्याप्त बारिश होने के बाद चावल की परती भूमि में दालें (कुल्थी /लथिरस) या तोरिया चुनें।*
- *फसल खराब होने पर होने वाले आर्थिक नुकसान को कम करने के लिए फसल बीमा कराना चाहिए।*